मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख पूर्ण अंक २०४ जुलाई-२०२४
Volume no. 18, Issue No. 204 July 2024

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१
Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001

श्री नरनारायणदेव समक्ष प.पू. लालजी महाराजश्री के लग्न की कंकोत्री लिखते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री ।

श्री नरनारायणदेव के समक्ष आम्रोत्सव का दर्शन ।

श्री नरनारायणदेव के समक्ष खारेक की अन्नकूट आरती उतारते प.पू. बड़े महाराजश्री ।

कालुपुर मंदिर में संत महादीक्षा देते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

कालुपुर मंदिर में प्रत्येक पूनम को होने वाली सत्संग सभा में दर्शन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १७ ● अंक : २०४ ● जुलाई-२०२४

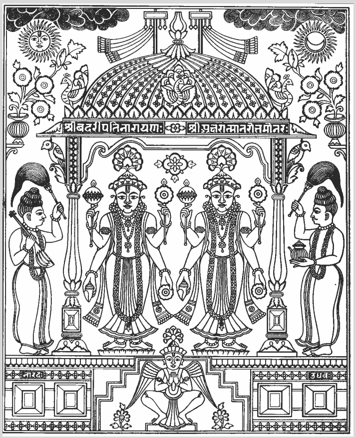

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, ०५
प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

०३. श्रीहरि द्वारा बताया गया सरल ध्यान ०६

०४. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन ०८

०५. अपने हरि मंदिर तथा प्रसादी के स्थल १३
(सादरा-वासणा देश)

०६. श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से १४

०७. भक्ति सुधा १५

०८. सत्संग समाचार १९

अस्मदीयम्

प्रिय हरिभक्तो,

प्रत्येक पूर्णिमा को श्री नरनारायणदेव के दिव्य सभा मंडप में प्रातः ८ से ११ (श्रृंगार आरती से राजभोग आरती तक) दिव्य सभा का आयोजन किया जाता है। जिज्ञासु हरिभक्त लाभ लेकर भगवान के दिव्य चरित्र का ज्ञान, ज्ञाता संतो के पास से प्राप्त करते है।

इसबार पू. महाराजश्री एक के बाद एक गाँव को सत्संग सभा में लाभ लेने के लिये आमंत्रण दिये है। यहाँ पर प्रत्येक हरिभक्त के लिये भोजन व्यवस्था की जायेगी।

आने वाली पूर्णिमा अपने गुरु पूजन की पूर्णिमा ता. २१ जुलाई २०२४ रविवार को आ रही है। इसलिये सभी को आने की अनुकूलता रहेगी।

संसार में रहना है। लेकिन संसार आप में प्रवेशनही करे यह देखना है। नाव में पानी नही भरने देना है। बाद में यह डूब जायेगी। गुरु के साथ होने पर नाव नही डूबती है। हम सभी के तार नरनारायणदेव से जुडा हुआ है।

हम सभी को भगवान का बनना है। देव का होना है। इसके लिये योग्यता विकसित करना है। भगवान अपना चयन करे। इस लिये वह योग्यता अपने में लाना है। योग्यता प्राप्त करने के लिये क्या करे ? मन के विकार का त्याग करना चाहिए। महाराज के प्रत्येक आज्ञा का पालन करना चाहिए। महाराज ने कहा है कि जब तक मै और मेरे का भाव नही छूटेगा। तब तक भगवान दूर रहते है। यह बात निश्चित है। अपने व्यवहार की गंदगी अंदर नही रखना है। जब तक लोभ, मोह, क्रोध, काम जैसे दोष हमारे भीतर होगा। तब तक भगवत भक्ति में आनंद नही प्राप्त होगा।

इसमें भी भगवान ने लोभ के लिये ''मेरे आश्रित लोभ रुपी आसक्ति नही रखे। ऐसा बोले है। जयश्री स्वामिनारायण।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा (जून-२०२४)

१ एटलान्टा (अमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

२ राले (अमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर लेकलेन्ड (अमेरिका) पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर जेकशन विले (अमेरिका) पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर एलनटाउन (अमेरिका) पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

१३ श्री नरनारायणदेव समक्ष प.पू. लालजी महाराजश्री की लग्नोत्सव पत्रिका लिखने का मुहूर्त करना ।

१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

१८ एकादशी के दिन कालुपुर मंदिर दर्शन हेतु पधारना ।

२१ श्री नरनारायणादि देवो को केसरस्नान स्वयं के करकमलो द्वारा विधिवत रुप से पूर्ण करना । संत महादीक्षा विधि स्वयं के करकमलो से पूर्ण किये ।

२२ पूनम के सत्संग सभा में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर पधारना सभा को आशीर्वाद दिये ।

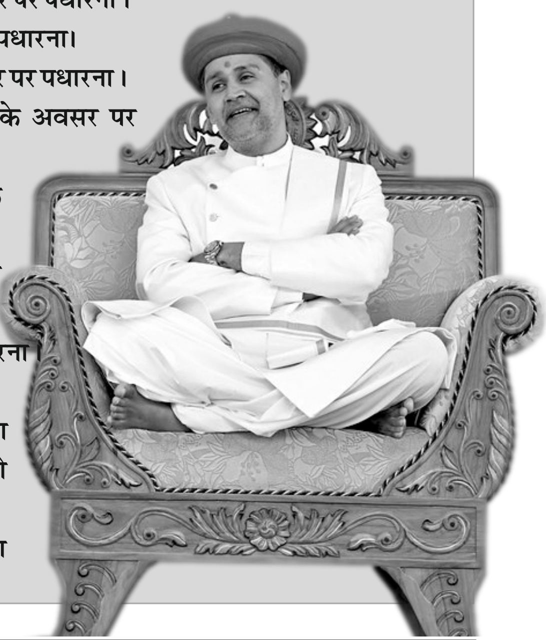

પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રીના કાર્યક્રમની તવારીખ (जून-२०२४)

२५ मई से १२ जून तक अमेरिका धर्मप्रवास - श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीपनी (अमेरिका) पाटोत्सव अवसर पर पधारना । डलास (अमेरिका) सत्संग सभा में पधारना । न्युयोर्क और जेकशनविले (अमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर सत्संग सभा के अवसर पर पधारना । श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया (अमेरिका) श्री जनमंगल यज्ञ के अवसर पर और ठाकुरजी के आम्रोत्सव के अवसर पर पधारना । कोलोनीया में सत्संग सभा के अवसर पर पधारना ।

२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनारायणादि देवो को केसर स्नान स्वयं के करकमलो द्वारा पूर्ण किये ।

श्रीहरि द्वारा बताया गया

सरल ध्यान

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

वर्तमान समय में मनुष्य जीवन से परेशान है। विचारो के तूफान से बाहर निकलने के लिये ध्यान की शिबिर ध्यान केन्द्र ध्यानि, ज्ञानी, योगियो के शरण में जाता है। उसके पास से ध्यान सिखने की कला सिखता है। सिखने वाले को ऐसा लगता है मुझे ध्यान करने नही आता है। अर्थात् ध्यान नही लगता है। अर्थात् शिबिर में रहेगे तो ध्यान करना आ जायेगा। इस अवस्था में मनुष्य असंख्य सोसियल मिडिया मे से सूचना लेकर कही न कही लाखो के भूगतान करके केन्द्रो में महीने तक प्रशिक्षण लेते रहते है। वहाँ के वातावरण के आधार पर कई भोजन के नियम से मन कुछ स्तरतक प्रभावी हो जाता है। लेकिन वह ज्यो उस वातावरण से बाहर आता है। पुनः मन वैसा ही हो जाता है। ध्यान के लिये शिबिर में जाना पडता है। लाखो खर्च भी करना पडता है। कई स्थानो पर ध्यान के सहारे अपने सम्प्रदाय अपने गुरु के सिवाय जुडना पडता है। हमारी परम्परा हमारी उपासना तथा गुरु मंत्र में रुकावट आती है। जिससे उपासना खंडित हो जाती है। इसी तरह के कई प्रश्न पैदा होते है।

भगवान श्री स्वामिनारायणने अपने त्यागी गृहस्थो के लिये सहज ध्यान की विधि बताये है। इसके कही पर नही जाना पडता है। उसे सिखना भी नही पडता है। सरल ध्यान का उपाय है। उसे बता रहा हूँ आप सभी सुने।

भक्ति शास्त्र सत्संगि भूषण के दूसरे अंश में अध्याय–२७ में यह बात सद्‌गुरु ब्रह्मचारी वासुदेवानंदवर्णी लिखते है कि एक बार श्रीहरि सहजानंद स्वामी अति प्यारे धाम जेतलपुर तीर्थ धाम में देव सरोवर के पास हजारो भक्तो धिरे सुंदर पाट के उपर पूर्वाभिमुख सूर्योदय के समय प्रेमानंद स्वामी सरोद लेकर मूर्ति ते वर्णन को गा रहे थे। ब्रह्मानंद स्वामी, देवानंद स्वामी, मुक्तानंद स्वामी आदि परमहंसो वादय यंत्र बजाकर साथ दिये थे। श्रीहरि नेत्र कमल बंद करके जंधे पर हाथ द्वारा ताली बजा रहे थे। कीर्तन भक्ति पूर्ण होने के बाद श्रीजी महाराज दोनो हाथ उपर उठाकर बोले कि :–

हे सत्संगियो और मुनिजनो आप जब मेरी भजन करने बैठे तो सर्व प्रथम सिहासन की अवस्था में बैठे। और नाक के सामने दृष्टि रखे। इसके बाद भजन गाने वाले मनुष्य को अपने शरीर में जहाँ पर प्राण (श्वास) की ग्रन्थि है। वहाँ पर दृष्टि रखे। अर्थात् नासिका के अग्र भाग पर मन की वृत्ति रखे। सभी वृत्तियो को छोडकर सासोश्वास पर ध्यान देना चाहिए। ठंडी गरम वायु का आभास करते आत्म स्वरुप का चिंतन करते आत्मा में अपनी मूर्ति दिखे इसके बाद हमारी

मूर्ति का दर्शन करे श्वेत वस्त्र धारी, पुष्पहार से सुशोभित कंठवाली, प्रसन्न मुखारविंद वाले पगडी पहने हुए ऐसी मूर्ति वाले, दाहिने आँख के निचले भाग में और नाक के पास एक तिल तथा बाये कान में एक काला बिंदू है। उसका दर्शन करे। वह मूर्ति अपनी आत्मा से अलग देखे। इस मूर्ति को मायिक मिथ्या नही समझे। उसे सदैव सत्य समझे। प्राण तथा अपमान का उद्‌गम तथा उसमें रहने वाला स्थान वह आप को देखना है। जीवात्मा में अपनीवृत्ति रखे। वह दृष्टा मेरा सच्चा स्वरुप है। ऐसा आप को मानना है। हे त्यागी और गृहस्थ के नर-नारी लोग। इस प्रकार आप सभी को निरन्तर चिंतन करते रहना है। इस प्रकार सारी प्रक्रिया में मेरा द्रशन प्राप्त होगा। (अध्याय-३७)

जेतलपुर सभा में श्रीजी महाराज अति सरल श्रेष्ठ योगियो को कोटि जन्म में जो बात सिद्ध हो वह अति उपयोगी बात भगवान की मूर्ति में अखंड वृत्ति रखने की विधि बता दिये है। अपने शास्त्रो में अपार ज्ञान भरा हुआ है। उसे समय निकाल कर हम सभी देखते नही है ।धनतो अपने पास है लेकिन हम सभी बाहर खोजते है। सर्व स्मरण वाली बात कहे है। हम सभी चौबीस घंटे में २१६०० बार सांस लेते है। यह क्रिया सतत चलती रहती है। इस पर अपना ध्यान ही जाता है। यह क्रिया दिन-रात स्वयं होती रहती है। एक जगह बैठकर साँस का आना-जाना देखना है। श्वास गर्म लगती है ? या शीतल है ? इसका अनुभव करना है। यह पांच मिनट को मूर्ति से लेकर आधे घंटे तकरना चाहिए। इस प्रकार श्वास में परमात्मा दिखाई देगे। यह उपाय श्रीजी महाराज बताये है। श्वासोश्वास देखने से मन के सभी दोष दूर होकर मन पवित्र हो जाता है, विचारो को विराम, विचारो का विसर्जन हो जाता है। मन निर्दोष हो जाता है। मूर्ति में वृत्ति लग जाती है। विना मन को शुद्ध किये भगवान में मन नही लगेगा। यह सत्य सनातन बात है। मूहुर्त देखे बिना श्रीहरिने जो आदेश किया है। उस अनुसार कार्य करने लगे। इस बात का विशद रुप श्रीमद् सत्संगिभूषण के दूसरे अंशके ३७ वे अध्याय में लिखा गया है।

ज्येष्ठ सुद-१५ (पूनम) सत्संग सभा के यजमानश्री

प.पू.ध.धु. आचार्य महारजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अह्मदाबाद मंदिर के पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ज्येष्ठ सुद-पूनम सत्संग सभा, ठाकुरजी की थाल, संतवर्णी पार्षदो और हरिभक्तो के रसोई के यजमान प.भ. अमृतभाई मणीभाई पटेल, अ.सौ. संगीताबेन अमृतभाई पटेल, प्रेयश अमृतभाई पटेल, रानूबेन अमृतभाई पटेल तथा पावनी पटेल (चांदखेडा)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव का केसर युक्त स्नान के यजमानश्री

प.पू.ध.धु. आचार्य महारजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से साथ अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा-मार्गदर्शन मे श्री नरनारायणदेव आदि देवो का केसर स्नान तारीख २१-०६-२०२४ के यजमान उनावा गाँव मित्र मंडल के पटेल मुकेशभाई लालभाई, पटेल प्रकाशभाई लालभाई, पटेल मनीषभाई नटवरभाई, पटेल देवेन्द्रभाई नारणभाई, पटेल विनुभाई अंबालाल और पटेल दक्षेशभाई रमेशभाई आदि परिवार था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से

अमृत वचन

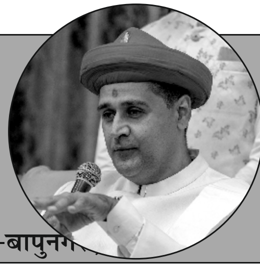

– संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनग

दरबारगढ मंदिर मोरबी सार्ध शताब्दी महोत्सव के अवसर पर ता. २०-०५-२०२४ : मै सर्वप्रथम बाप जी के साथ आया तभी आशीर्वाद देने की प्रथा प्रारम्भ नही हुआ थी । लेकिन शिक्षापत्री का श्लोक बोले थे । जो महाराज आशीर्वाद दिये थे । मुझे याद नही है कि हमारी सात पीढी में कोई आशीर्वाद दिया हो । बापजी हो या देवेन्द्रप्रसादजी दादा हो सभी ने ऐसा कहा है कि ''भगवान अच्छा करे, हम भगवान से प्रार्थना करेगे ।'' क्योकि आशीर्वाद देकर हम थैली नही भरते है।

इस संसार में जो है भगवान ही है। भगवान की केन्द्र बिंदु है । भगवानने आचार्य का, संतो का, पार्षदो को हरिभक्तोका एक स्थान निश्चित किये है । हम सभी एक दूसरे की मर्यादा में रहकर आपस में सम्मान-आदर से रहना चाहिए।

हम सभी को निश्चित निर्णय लेकर भगवान के लिये कार्य करना चाहिए । करना ही है । इतना बड़ा समुदाय, शक्ति तथा भगवान के प्रति श्रद्धा और विश्वास जब है तो इसमें कमी नही रखना चाहिए । सिंद्धांत, परम्परा को नही छोडना चाहिए । भगवानने महासुख का आशीर्वाद हम लोगो को दिये है । उनके द्वारा बताये मार्ग का अनुसरण करने पर कार्य में असफलता नही मिलता है । दुख-वेदना नही होता है।

हम सभी सुखी है उसके कारण भगवान है । हम अपने बल-बुद्धि से सुखी नही है । वास्तव में मुझे एक ही इन्द्रिय ज्ञान है वह भगवान है। भगवान के सिवाय मुझे कुछ भी पता नही है। जब से भगवान को जाना हूँ। तब से एक ही भगवान सच्चे है। शेष ग्रह नक्षत्र कुछ भी नही । प्लेन उडता है। यह गृह नक्षत्र देख कर उडता है। प्लेन का टिकिट आप लिये है । कुछ समय के बाद आपकी प्लेन में बैठा दिया जाता है । उस समय अपना सामान देखते है ? भगवान पर भरोसा होने पर वह नीचे से उडकर उपर जाता है । कुछ प्रतिरोध नही है । केवल अपना स्वभाव लडता है । महाराजने अपने आश्रितो के लिये दरवाजा खिडकी बंद रखे है । और अक्षरवास को खुला रखे है । महाराज हम सभी के लिये अन्य दरवाजे बंद रखे है । भगवान नही रहते तो अपनी दसा कैसी रहती ? तरह-तरह धाँगे बँध वाते है । अनेक रंग के लोग धागा बँधवाते है । भाई आप पूरे ही नंग है । शौक से पहने यह अनेक रंग के लोग धामा बँधवाते है । अपना सच्चा आभूषण कंठी है । शरणागति की यह कंठी पहनकर हम छाती खोलकर टहलते है ।मेरे मरजी के सिवाय कुछ नही कर सकता है । जिसे भगवान के सहारा का स्वाभिमान नही हो वह भगवान का आश्रित ही नही है । हमारे भगवान के चरणो में सभी तीर्थ है । कही पर जाने की आवश्यकता नही है।

दोनो गद्दियो के अब तक के जो आचार्य बने है । कोई आचार्य अपने फोटो की पूजा नही करवाया है । भगवान की प्रधानता ही यह सत्संग है। यह ही समझने की बात है। यह संत भी किसी से अपनी पहचान नही देते है । कोई अपना फोटो दे तो उसे छोड दे । मुझे पूजने की ईच्छा हो तो भी इसी समय छोड दे ।अपना एक ध्येय भगवान ही है। शेष रास्ता के साधन है। कथा-वार्ता हो किसी को हार पहनाये **End of the day** भगवान तक जाने के ये सभी साधन है। परिश्रम है। इस संसार में भगवान से बडा कोई नही है।

मंदिर तो मंदिर है। लेकिन अपना घर एवम् हृदय भी एक मंदिर है । यही वारसा एवम् परम्परा हमे प्रदान करना है। महाराज भी कहे ही हम भगवान के महत्व की बात बार-बार करते है। हम बार-बार श्री नरनारायणदेव के महत्व को कहते है। यह इसका मुख्य केन्द्र है। (जे.-५) प्रत्येक शास्त्र की यह बात है । हमे एक दूसरे के स्वभाव को सहन करते एक दूसरे के प्रति प्रेम स्नेह

सम्मान करना है । मंदिर के महंत ऐसा नही की बहुत अच्छे हो गये है । महंत को भी गाली सुनना पडता है ।

RSS (राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ) में मुझे बुलाया गया था । बोलने के लिये कहे इस लिये बोले ।मे रे से उन्हो ने गुण लिया । इससे कोई दम्भ नही है । जो है सो है । मुझे वहाँ पर देखकर लगा कि हमे कभी कथा बंद करके अनुशासित रुप से सभी को समझाये । इस लिये एरिया बाइज शिबिर करना चाहिए ।

भगवानने हमे क्या दिया है ? उसे समझने में पूराजीवन लग जायेगा । अपने पास समय नही है । समय मोबाईल खा चुका है । वास्तविकता यह है कि कथा सुनने के बाद उसका मनन, चिंतन और अभ्यास करे तो सार्थक बात है ।

वांकानेर मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव ता. २०-०५-२०२४ : यह गाँव प्रेमी, भावनाशील और निष्ठावाला है । जिस घर में मै उतरा हूँ । उसी घर में देवन्द्रप्रसादजी दादा उतरे थे । ऐसा संतो से ज्ञात हुआ है । इस कारण से मै अपने को भाग्यशाली मानता हूँ । इतिहास आप जानते है । यह गाँव ऐतिहासिक है । युवको को शायद ज्ञात नही हो । इस गाँव की स्थापना १९०७ में हुई थी । मच्छू की नहर यह पर मुडी है । इस लिये इसे वांका कानेर (वांकानेर) कहते है । जब से इस गाँव की स्थापना हुई है । तभी से इस गाँव में अपना सत्संग हो रहा है । यह प्राचीन मंदिर है ।

प्रणालिका परम्परा, और धरोहर को बचाना यह हम सभी को नैतिक जिम्मेदारी है । और यह कठिन कार्य है । सरल नही है । भगवान को सुरक्षा, सिद्धान्त की सुरक्षा, इन से हम सुरक्षित है ।

वारसा में क्या दे यह प्रश्न है ? घर बार दुकान तो सभी लोग देते है । मुझे याद है कि उत्तर गुजरात में चौधरी के गाँव में गये थे । लडकियो का सामुहिक विवाह था । मंदिर के द्वारा सभी देने वाली वस्तुओ के उपर भगवान की मूर्ति रखी गयी थी । जो देखकर अच्छा लगा । भगवान दिये तो सब सार्थक हो गया । वारसा में भगवान को दे यह सबसे अच्छी बात है । क्योकि अन्य कोई वस्तु स्थायी नही है । भगवान स्थायी रहने वाले है । एक भगवान को पकडे तो शेष अन्य कार्य करना आवश्यक नही है ।

ज्ञात हुआ है कि मंदिर में युवक अधिक आते है । यह गर्व की बात है । यदि बीज अच्छा है तो वृक्ष अच्छा ही पनपेगा । माँ-बाप बडो ने तो संस्कार दिये ही होगे । तभी तो यह हरियाली है । कुए में होने पर ढकुर (पात्र) मे आता है । यह कहावत है । वृद्धो से आग्रह है कि युवको को और प्रेरित करे । देव का दर्शन एक बार अवश्य करे । संध्याकाल में महाराजने देव दर्शन की बात बताये है । दिन में एकबार मंदिर अवश्य जाना जाहिए । मंदिर में विराजमान देव हम सभी के बाप है । इस लिये आलस्य से नही प्रेम से जाना चाहिए ।

इस गाँव का सत्संग मेइनटिनेन्स फ्री है । यह सत्य कह रहा हूँ । मेइटीनेन्नस रखना सिर का दर्द होता है । संतो को और हमे ज्ञात है कि एक हार पहनाया बाकी रह जाता है तो पूरी जीवन में गाँठ बांधकर ऐसे लोग भटकते है । इस गाँव में मेईटीनेन्स नही है । जब मै छोटा था । तब से आजतक वही प्रेम भाव दिखायी दे रहा है । क्योकि आप सभी भगवान से जुडे हुए है । यह एक बडी बात है । नही तो मेइटीनेन्स का भार सभी को भारी पडता है । कोई भी गाडी लाये । मरम्मत करे तो देना ही पडता है । घर में दीपक-बत्ती लाते है । उसका भी खर्च आज्ञा है । इस गाँव के प्रति हमें गर्व है कि सभी भावना शील है और हृदय पूर्वक जूडे हुए है ।

अहमदाबाद कालुपुर मंदिर पूनम सत्संग सभा ता. २३-०५-२०२४ : रामनगर (गाँव) यजमान परिवार अच्छा है । हरि भक्त अच्छे है । हम कई बार गये है । अलग-बगल के गाँव अच्छे है । नरनारायणदेव के प्रति निष्ठा वाले है ।

लालजी महाराजश्रीने सरस और सत्य बात किये है कि शूरता वाला भाव रखे । साग की छाया में दबना नही है । यह वचनामृत के शब्द है । यह वीरता कहा से आती है ? वाँह चढाकर नही इसके लिये है धैर्य रखना पडता है । हम कौन है ? किसके बच्चे हैं ? हमे कौन मिला है ? अपनी परम्परा क्या है ? हमारे सिद्धान्त क्या है ? महाराज कौन है ? नरनारायणदेव कौन है ? महाराज चौखट के उपर खडे

होकर कहे है इसमें तथा हमारे में रंचभात्र भी भेद नही है। यह सब शास्त्र की बात है। इस श्री नरनारायणदेव के बारे तथा हमारे बारे में भी अन्तर नही समझे (अम.-६)

महाराज यहाँ से प्रारम्भ किये है। पूनम दर्शन की आज्ञा दिये है। शुरुआत इस मंदिर से किया गया है। बाद में सभी प्रारम्भ किया। बच्चे-बच्ची को दे। नभी दे। लेकिन यहाँ भगवान के सुख के लिये आना है। मुझ से किसी ने कहा है कि मैने पूनम बाँधी है ? हाथ में कडी पहने है ? बांधना अधूरा है। हमारा मन तो बँधता नही है। सभा मैं बैठे-बैठे कोई रामनगर चला जाता है। कोई सूरत राजकोट, जीरागढ या जामनगर तो कोई मोबाईल में कही भी चला जाता है।

मानव कमजोर कब हो जाता है ? यदि उसे अच्छा पोषण नही मिलता है। मन कब कमजोर बनता है ? जब हम कौन है ? किसके है इसका ज्ञान नही हो तो, या सम्प्रदाय की पूर्ण जानकारी नही हो तो मन कमजोर बनता है। फिर कहतेहै कि पिछ्ला जैसा अब नही है। हाँ भाई पहले जैसा नही है। मै स्वीकार करता हूँ। लेकिन कैसे ? अभी पहले से अच्छा हुआ है। आप विचार करे। आज उसे गाँवो में भ्रमण करते है। तो भी पूरा नही होता है। गाँव-गाँव में सत्संग है। अभी विदेश यात्रा में चार पाटोत्सव सप्ताह में हुई है।

आनंद की बात तो यह है कि नरनारायणदेव के संत और हरिभक्त देव का बनकर रहने में स्वाभिमान रखते है। इसके कारण हमे बल मिलता है। कोई भी कार्यक्रम हो, हमे आने की इच्छा होती है। खुशी होती है। आप सभी का मुखारविंद देकर खुशी मिलती है। ऐसा लगता है चले। घर से अच्छा गाँव है। कही न कही किसी गाँव में भगवान का दर्शन मिलता है। हरिभक्तो का दर्शन होता है। हमे दूसरा करना भी क्या है ? मौका मिलनेप र सत्संग का काम कर ले। यह नही कह रहे है कि पूरे दिन माला फेरते रहे। जिसके है उस जान कर छाती चौडी कर के चले। बनाई गई छाती कुछ दिन तक चला सकते है।

दूसरे स्वामीने कथा में पंक्ति भेद की बात कहे है। यह बड़ी बात है। लेकिन तकलीफ यह है कि यह प्रतिदिन का सुना है। दर्शन करे। आऱ्ती करे यह पूरा होता है। अभी आऱ्ती बोली गयी है। कि इस अवसर पर करुणानिधि अधिक करुणा किये है। एक पंक्ति में पूरी महिमा नही बताया जा सकता है। ऋषिमुनि नेति-नेति कहकर गये है। नंद संत दंड, गदय, पद्य में कितना लिखे है। भगवान के विषय में धीरे-धीरे लिखे है। यद्लिखना नही पडा था। काम हो गया था। करना नही पडा था। शूरवीरता की बात लिखी गयी है। अद्भूतानंद स्वामी पूर्वाश्रम में विवाह के मण्डप में मोर पहनकर बैठे थे। महाराज ने कागज मे एक आदिक लिखे। इस पत्र को पढकर पत्र में उनका नाम नही होने पर भी त्यागाश्रम की तरफ चल दिये। हम सभी दो-तीन फोन आने पर भी खडे नही होते है। कार्य अधिक है। ऐसा उत्तर दे देते है। नंद संत हो या हरिभक्त, कीर्तन गाना नही पडता है। गाया जाता है। महाराज ने भाडे वाले आदमी नही रखे थे। आज को कही कही भाडे वाले आदमी रखे जाता है। वादय यंत्र लेकर दीन-दीन करते आ जाते है। दुनिया में क्या चल रहा है। हम सभी कितने भाग्यशाली है। शेष तो संसार में खो जाये।

पंक्ति भेद अर्थात् महाराज भोजन करने के पंक्तिभेद के विषय में नमही कह रहे है। महाराजने सत्संग में सभी के प्रति समभाव रखने की बात कहे है। किसी के प्रति छोटे-बड़े का भाव नही रखने के लिये कहे है। (देह दृष्टि नहि रखे कि मै बडा वह छोटा है अहम-८) प्रत्येक संत-हरिभक्त गुण बुद्धि रखे। समानता अर्थात् सभी एक समान हो जाते है। सभी का स्वभाव समान नही होता है। ऐसा नही रहने पर मूड खराब हो जाता है। स्वभाव तो अलग ही रहेगा। लेकिन एक दूसरे के लिये लगाव गुण बुद्धि रखे। पंक्ति में भोजन करने बैठे तो रोटी सभी को मिलना चाहिए। सब्जी हो तो सभी को मिले।

पंक्तिभेद अर्थात् मनभेद की पंक्ति की बात है। घर में मनभेद होने पर घर में बटवारा हो जाता है। समाज में समाज भेद हो जाता है। महाराज ने यह सब किसके लिये कहे है ? अपने लोगो के लिये कहे है। हम जैसे टी.वी. में समय व्यतीत करते है। इस तरह महाराज टाईम पास नही करते है। गुण-अवगुण सभी में रहता है। सही पर अवगुण को नकार कर भगवान के भक्त में से गुण ग्रहण करना चाहिए।

दूसरा एक और विरोधाभाषी शब्द है । ''कोनेवाला सत्संग'' कोने वाला सत्संग नही करना चाहिए । भोजन करने वाली पंक्ति में सभी लोग एक साथ बैठते है । उसमें से दो-तीन लोग अलग बैठकर खाये तो कैसा लगेगा ? उसी प्रकार सभी लोग सभा में एक साथ बैठे हो । उस में दो-तीन लोग कोने में जाकर शांति से वार्ता करते हो । वह कोनेका सत्संग कहा जाता है । ऐसा क्या है कि उन्हें कोने में जाना पडता है ? किसी के चबूतरे पर बैठकर गप मारते हो । इसका नाम कोने का सत्संग है । जो मै कह रहा हूँ सभा में नही कहता हूँ जिसे सुनना हो वह सुने । मैं तो भगवान के वचन को ही कह रहा हूँ । भगवान के वचन के बाहर बोलना है तो कोना खोजना पडता है । यह भारी शब्द है । विवेचना में हमार समय चला जायेगा । लेकिन सत्य यह है कि कोने का सत्संग संसार के सभी सम्प्रदाय की नींव खोदती है । अपनी बात नही कर रहे है ।

महाराज के समय सत्संग नही था ऐसी बात नही है । महाराज ने ही सत्संग को जीवित किये है । समाप्त हो गया था । उसे प्रारम्भ किये जड को भूलना अर्थात् सब कुछ भूल जाना हो ता है ।

गाँवो में हम घुमते है । इस रामनगर में आकर हमे क्या प्राप्त करना है गाँव हमारी जीवन रेखा है । गाँव में जाने पर रक्त बढ जाता है । सत्य कह रहा हूँ । **Seriously** कहता हूँ । दस घंटे की यात्रा करके आये है । वहाँ पर जाकर हरिभक्तो के मध्य कुछ समय प्रेम पूर्वक व्यतीत करने से सब कुछ सार्थक हो जाता है । आप के तथा हमारे बुर्जुगो ने सत्संग रखा है । हम लोग सीढी चढ रहे है । यदि ऐसा नही किये होते तो सीढी कैसे चढते । देव का आशीर्वाद है । देव के प्रांगण में बैठकर हम सभी दो घडी सत्संग की बात सुनते है ।नही तो यह नही प्राप्त होता ।

यजमान परिवार ने लाभ उठाया । दूसरा भी लाभ लेगा ? आप सभी एकत्र हुए है । मै अनुरोध करता हूँ कि सुखी होना हो तो पूनम रखना या बांधनो इससे अच्छा है कि नरनारायणदेव के पास आये । अडसठ तीरथ चरण में कोटी गया काशी । घूमना हो तो कही पर भी जाये । यह मना नही है । हमारा नियम है कि हम कही नही जाते है । पाटोत्सव में जाना, छोटे से छोटे मंदिर में जाना । यह चरण अन्यत्र नही जाता तथा कही नमन भी नही करता है । यह अपना स्वाभिमान है । ऐसे निर्णय से हम दुखी नही होगे । इसको लिख कर दे रहा हूँ । क्योकि यह महाराज के वचन है । मेरा नही इस चौखट पर खडे होकर कहे थे। हम लोग इतने भाग्यशाली है कि देव के दर्शन का लाभ हमे प्राप्त है ।

इसी भूमि के उपर महाराज विराजमान थे । चलते थे । बातचीत करते थे । खेलते और भोजन करते थे । इसी भूमि पर आज हम सभी को बैठने का लाभ मिल रहा है । यह रमण रेती है । इस रमण रेती में हमे और आप को खेलना चाहिए । अब हर जगह कंक्रीट हो गया है । अपने मंदिर की बात मैं नही कर रहा हूँ । पूरे अहमदाबाद एवम् गाँव की बात कर रहा हूँ । पांच डिग्री सेल्सियस तापमान इससे बढ जाता है । कांक्रीट के जंगल का कार्य चालू है है । पता नही क्या होने वाला है ? यह तो दूसरी बात है । अपना किनारा तो देव है ।

अपनी भक्ति, अपनी श्रध्धा इसके अलावा कही जाये तो जीवन का क्या काम है ? अपने बुर्जुगोने जो बीज बोये है उसे कामयाबी मिले यही देखना है । यह देव ऐसे है । इन्हे पहचाना नही जा सकता है । लेकिन प्रयास करना है । यह एक मार्ग है । महाराज बोले है । पूर्ण काम नही होता है । लेकिन अनपे जीवन की एक गति है । गुण बुद्धि आने से आगे आगे बढते रहते है ।

पूनम को देव का दर्शन करने आये तो इतना ध्यान दे आज एक व्यक्ति का फोन आया था । मैने पूछा मंदिर में हो ? तो वह बोले आज गर्मी अधिक है । मैंने कहा दोपहर में और गर्मी होगी । शायं में आना । बहाना करना हो तो कई बहाने है । उल्टे को उल्टा जवाब देना चाहिए । जैसा प्रश्न ऐसा उत्तर भी दे देना चाहिए । महाराज ऐसा ही करते थे । हमे कुछ तो प्रभाव आयेगा ही ।

आप सभी पूनम हेतु आये है । धन्यवाद है । आते रहे साथ में हित-मित्र को भी लाये । भीड के लिये नही कर रहा हूँ । भीड तो गरबा सर्कस में भी होती है । यहाँ आने पर देव की नजर पडे तो जीव और परिवार का मंगल होवे इस कारण से कह रहा हूँ । दूसरा कारण नही है । सभी ने आरती उतारी । प्रसाद लेकर ही जाये । जय स्वामिनारायण

हिंडोला उत्सव

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में

प्रात, झरना, पहाड, तालाब, फूल, वृक्ष, पौधे जैसे प्राकृतिक प्रकल्पो के सानिध्य में अनेक प्रकार के कलात्मक हिंडोले का दर्शन।

दि. २३-०७-२०२४ से २१-०८-२०२४ तक

तिथि	तारीख	दिन	हिंडोला
अषाढ वद-२	२३-७	मंगलवार	फुल
अषाढ वद-३/४	२४-७	बुधवार	कलर सर्कल
अषाढ वद-५	२५-७	गुरुवार	सफेद मोती
अषाढ वद-६	२६-७	शुक्रवार	मीनाकारी
अषाढ वद-७	२७-७	शनिवार	कच्छी पेच
अषाढ वद-८	२८-७	रविवार	शाकभाजी
अषाढ वद-९	२९-७	सोमवार	कुन्दन
अषाढ वद-१०	३०-७	मंगलवार	चोकलेट
एकादशी अषाढ वद-११	३१-७	बुधवार	सूको मेवो
अषाढ वद-१२	०१-८	गुरुवार	रेशम दोरी
अषाढ वद-१३	०२-८	शुक्रवार	कोटन आर्ट
अषाढ वद-१४	०३-८	शनिवार	एक्रेलीक पीस
अमास अषाढ वद-३०	०४-८	रविवार	डायमंड
श्रावण सुद-१	०५-८	सोमवार	फ्रूट
श्रावण सुद-२	०६-८	मंगलवार	चोकलेट

तिथि	तारीख	दिन	हिंडोला
श्रावण सुद-३	०७-८	बुधवार	गोल्डन
श्रावण सुद-४	०८-८	गुरुवार	काच
श्रावण सुद-५	०९-८	शुक्रवार	नंग
श्रावण सुद-६	१०-८	शनिवार	फूल
श्रावण सुद-७	११-८	रविवार	डायमंड पेच
श्रावण सुद-७	१२-८	सोमवार	मोती
श्रावण सुद-८	१३-८	मंगलवार	वासण
श्रावण सुद-९	१४-८	बुधवार	सूको मेवो
श्रावण सुद-१०	१५-८	गुरुवार	राष्ट्रध्वज
एकादशी श्रावण सुद-११	१६-८	शुक्रवार	पविश्रा
श्रावण सुद-१२/१३	१७-८	शनिवार	फूल
श्रावण सुद-१४	१८-८	रविवार	झरी
पूनम-रक्षाबंधन श्रावण सुद-१५	१९-८	सोमवार	राखडी
श्रावण वद-१	२०-८	मंगलवार	झरदोशी पीसा
श्रावण वद-२	२१-८	बुधवार	वुडन आर्ट

अपने हरि मंदिर तथा प्रसादी के स्थल (सादरा-वासणा देश)

– बिपीन पटेल (गांधीनगर)

सततम निज मूर्ति चिंतकारनाम
अधिक श्वेत मनोहर प्रकाशे ।
रुधइ दर्शित रम्य दिव्य रुवम्,
भगवनतन तहम हरिम नमामि
भगवानतम तहम, हरिम नमामि ॥

श्रीहरि के पावन चरणो से अंकित उत्तर गुजरात के ''सादरावासणा देश'' की यात्रा करते करते हम अपने पिछले अंक में धरमपुरा भूंडिया, दोलराणा-वासणा और सादरा गाँव के महात्म का स्वाद लिये ।

आज आगे जाते हुए, महादेवपुरा छाला, महुद्रा और इसनपुर (मोटा) के मंदिरो-भक्तो का दर्शन महात्म को जानते है।

गांधीनगर से चिलोडा हो के हिंमतनगर हाईवे पर आगे जाने पर २९ की.मी. के अंतर महादेवपुरा गाँव आता है।

(१) महादेवपुरा (छाला) : महादेवपुरा गाँव में बदपुरा (ईश्वरपुरा) गाँव से चौधरी समाज के परिवार लगभग यहाँ पर ८० वर्ष पहले यहाँ आकर निवास बनाये थे । आज ४० परिवार यहाँ पर स्थायी रुप से निवास करता है । गाँव के ४ से ५ परिवार में से सत्संग का पोषण मा-बहने करती आ रही है। अब उन्हे मंदिर बनवाने की तीव्र इच्छा हुई है। उन लोगो ने श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ के उस समय के मंहत स्वामी प.पू. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी स्वामी से मंदिर बनाने का आग्रह किये थे । पू. पी.पी. स्वामी गाँव में जाकर सत्संग सभा प्रारम्भ किये । और स्तंसग में परिवार जुडता गया था । एक हरिभक्त मंदिर बनाने के लिये अपना घर, मंदिर की भेट में दे दिया था । और श्री स्वामिनारायण मंदिर - कालुपुर के नाम से दस्तावेज कर दिया । आज से ३ वर्ष पहले पू.पी.पी. स्वामी तथा पू. रामकृष्णदासजी स्वामी (कोटेश्वर) अधिक सुंदर तैयार करके श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा ता. १४-११-२०२२ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा की गई थी । आज तो गाँव में सत्संग फूल-फल रहा है।

(२) महुन्द्रा : गांधीनगर से चिलोडा होकर हिम्मनगर हाइवे पर २२ की.मी. की दूरी पर महुन्द्रा गाँव स्थित है । गाँव में कार्तिक वद-३ के दिन इ.स. २००५ के वर्ष में पू. हरिजीवन स्वामी सुदंर मंदिर तैयार करवा के श्री घनश्याम महाराज, श्री नरनारायणदेव तथा श्री राधाकृष्णदेव आदि देवो की मूर्ति प्रतिष्ठा प.पू.ध.धु. आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा की गई थी । गाँव के लगभग २५ सत्संगी रहते है । श्री स्वामिनारायण महुन्द्रा में गांधीगनर मंदिर के मंहत स्वामी व्रजभू षणदासजी नियमित कथा वार्ता करने जाते है । और सत्संग का पोषण कर रहे है।

(३) इसनपुर (मोटा) : गांधीनगर से चिलोडा होकर दहेगाम गांधीनगर रोड पर इसनपुर गाँव स्थित है । गाँव के प्रवेश द्वार पर सुदंर विशाल आर.सी.सी. के दो बड़े गेट बने है । जो गाँव की शोभा बढा रहे है । गांधीनगर से लगभग २२ की.मी. की दूरी पर स्थित है । आर्थिक रुप से समृद्ध पाटीदारो का गाँव है । गाँव में प्रवेश करते विशाल हास्पिटल आता है । गाँव में १०० वर्ष प्राचीन स्वामिनारायण भगवान का मंदिर स्थित है । मंदिर का जीर्णोद्धार करके पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा संवत २०५० कार्तिक सुद-६ के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के करकमलो से किया गया था । गोपालानंद स्वामी, खुशाल भट्ट के रुप में थे । तब अपने गाँव से जेतलपुर जाते थे ।उसके मध्य रास्ते में सलकी नांदोल और इसनपुर गाँवो से गुजरते थे । इसनपुर में महाकाली मंदिर के चबूतरो पर विश्राम किये थे । तब ग्रामीणो के आग्रह से मंदिर में मू.अ.मू. सद्गुरु गोपालानंद स्वामीने हनुमानजी की प्रतिष्ठा किये थे । ये हनुमानजी महान चमत्कारी है । लोगो की मनोकामना पूर्ण करते है । गाँव के लोगो को हनुमानजी के प्रति विशेष श्रद्धा है । मंदिर के बगल में महाकाली का मंदिर है । श्री स्वामिनारायण मंदिर के मुख्य सिंहासन में घनश्याम महाराज की मूर्ति प्रतिष्ठा है । दर्शन करके धन्य होते है । मंदिर के दरवाजा में सुंदर धातु के चद्दर में श्री नरनारायणदेव, श्री स्वामिनारायण भगवान, श्री हनुमानजी, श्री गणपतिजी और छडीदार सुंदर नयनरम्य मूर्ति उकेरी गयी है।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री यज्ञ पूजन की सूची - जून-२४

ता. ०२-०६-२०२४ प.भ.अ.नि. मोहनभाई डाह्याभाई चौहाण, अ.नि. रलीयातबेन मोहनभाई चौहाण - ह. महेन्द्रभाई तथा कृष्णकांत - जामसर (हालार).

ता. १६-०६-२०२४ प.भ. पूजाबेन समीरकुमार कनुगा - यु.एस.ए.

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची

मई-२०२४

ता. १२-०५-२०२४ प.भ.श्री तेजस महेन्द्रभाई पटेल - वडु.

ता. २४-०५-२०२४ प.भ. मनीषा करसन भुवा - सुखपर-कच्छ

जून-२०२४

ता. ०५-०६-२०२४ प.भ.श्री निकुलभाई डाह्याभाई चौधरी - बालवा.

ता. १६-०६-२०२४ प.भ.श्री निकीकुमार विष्णुभाई पटेल (गुलाबपुरावाला) चि. किसीवना जन्म दिवस निमित्ते.

ता. २१-०६-२०२४ प.भ.श्री डॉ. भक्ति निर्भय चंदाराणा - जन्म दिवस निमित्ते - कच्छ - हा. बावला.

ता. २२-०६-२०२४ प.भ.श्री मुकेशभाई बलदेवदास पटेल - डांगरवा.

ता. २३-०६-२०२४ प.भ.श्री कल्पनाबेन बिपीनभाई ठक्कर - थलतेज.

ता. २७-०६-२०२४ प.भ.अ.नि. सुमित्राबेन अरविंदभाई रमणलाल - ह. सोनल, आशिष, स्वाति तथा दिपक भावसार.

ता. २८-०६-२०२४ प.भ.श्री हिरालाल माणेकलाल पाटडीया - जुनावाडज.

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.
મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "प्रभावित नही हो प्रेरित हो"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

धर्मछोडकर भक्ति नही करना चाहिए । धर्म का पालन नही करने से भक्ति का फल नही मिलता है । धर्म के साथ भक्ति सफल होती है । क्योकि ? भक्ति कहाँ पर टिकती है । जहाँ पर घनश्याम (भगवान) मिलते है । इसलिये इसे शुद्धता से आचरण में लाना चाहिए । शुद्ध धर्म किसे कहते है ? जीतना स्वार्थ विना काम के धर्म का पालन करे तो उसे शुद्द धर्म पालन कहा जाता है । केवल यही लक्ष्य होना चाहिए । भगवान के चरण में वृत्ति तथा दृढ बने । और भगवत्चरण में प्रतीति बढे । कोई भी कार्य निष्काम भाव से करे । हमारे अदंर छोटी बड़ी कामना होती ही है । तब नास्तिक होने का भय बना रहता है । यदि कोई कार्य हो । औऱ अपने प्रारब्ध के कारण कार्य पूर्ण नही होता है । तो श्रद्धा कम हो जाती है । इस लिये धर्म का पालन किसी अपेक्षा से नही बल्कि अपना कर्म समझकर करना चाहिए । भगवान के आज्ञा में रहना अपना कर्तव्य है । ऐसा मानकर करे । बस भगवान की कृपा एवम् प्रेम दो ही वस्तु चाहिए । दूसरे वस्तुओ से सावधान रहना चाहिए । हम से भी भूल कहाँ पर होती है ? जब हम दूसरे को देख कर प्रभावित हो जाते है । इसका अर्थ यह नही है कि सोना-चाँदी के गहने मत बनवाये । इसका उद्देश्य दूसरे को प्रभावित करने वाला नही होना चाहिए । मात्र भगवान को खुश रखने का भाव होना चाहिए । लेकिन होता क्या है ? दूसरे को प्रभावित करने के लिये किया जाता है । यह सब देखकर हम आकर्षित हो जाते है । कि अच्छी व्यवस्था है । कैसा अच्छा सब कुछ है । भोजन अच्छा है । अच्छी व्यवस्था है । हम सभी इतना प्रभावित हो जाते है कि आप को अपने में अभाव पैदा हो जाता है ।

यदि हम दूसरे का घर देखर प्रभावित हो जाये तो क्या दूसरे के घऱ में रहने जाते है क्या ? नही जाते है ? हम यहाँ पर यही करते है । वडा मंदिर अच्छी व्यवस्था देखकर हम उससे प्रभावित हो जाते है । तो हमे सावधान रहना है । दूसरे आलीशन बंगले में माता-पिता रहे तो क्या वह बंगला आप का हो जायेगा ? अपने माता-पिता को छोड देगे ? बड़े बंगलेवाला माता-पिता के पास रहने चले जायेगे ? ऐसा नही कर सकते है । ऐसे नही जा सकते है । तो बताने का अर्थ यह है कि आप को बड़े बड़े मंदिर तथा ठहरने की अच्छी व्यवस्था सब मिलेगी । लेकिन नरनारायणदेव कहाँ से मिलेगे ? यदि ये नही मिलेगे तो उससे प्रभावित नही होना है । किसी का अच्छा देखकर उसकी वंदना करिये । भाव को कि हम भी प्रयास करेगे । मैं अपने मंदिर में ऐसा करुगा । लेकिन अपना छोडकर दूसरे का नही पकडना है । क्योकि ''अपना कल्याण नरनारायणदेव के चरणो में ही है । दूसरे का देखकर धर्म नही बदल देना चाहिए । कहने का अर्थ यह है कि स्वामिनारायण भगवान सिवाय दूसरे अवतार कल्याण नही करते है । प्रत्येक धर्म में व्यक्ति के आराध्य देव कल्याण करते ही है । दूसरे का देखकर अपनी पूजा विधि बदलना नही चाहिए । जो पहले से चली आ रही है वही सच्ची सेवा है । कई मंदिरो में आप देखेगे कि ज्यूस से अभिषेक करते है । आप को कोई ज्यूस से स्नान कराये तो कैसा लगेगा । जो पहले से चल रहा है । दही, दूध, घी, मधु, शक्कर यह ठीक है । सबके अलग-अलग आराध्य देव होते है । यह सब ठीक है । हमे स्थिरता रखना है । हम सभी भरतखंड में रहते है । उसके राजा 'नरनारायणदेव' है । नरनारायणदेव के चरणो को पकड कर रखे ।

सगवडिया धर्म का पालन नही करना चाहिए । कुछ बुद्धि का प्रयोग करना चाहिए । अपना छोडकर दूसरी जगह नही जाना चाहिए । किसी का विरोध नही करना है । किसी का विरोध नही है । लेकिन यह सब हमे समझना चाहिए। एक को पकडने से अपनी प्रगति शीघ्रता से होगी । यदि आप के घर में अंधेरा है और दूसरे के घर में दीपक जलाये । यह क्रिया अच्छी नही है । बड़े बंगले के रोशनी से प्रभावित न होकर अपने हृदय में प्रकाश उत्पन्न करे । यही सच्चा प्रकाश है । जब आप भगवान का दर्शन करने जाये तो आप के हृदय में अलौकिक भाव होना चाहिए. इसके सामने संसार की सभी वस्तु तुच्छ है । आप प्रयास करे कि नरनारायणदेव के चरण में आपकी प्रीति दृढ बने । और प्रयास करे । लोगो के वैभव को देखकर प्रभावित नही हो ।

•

"श्री चरणारविंद के चिह्न की महिमा

– सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

सामुद्रिक शास्त्र के आधार पर परमात्मा के अवतार को चरणो में सोलह कल्याणकारी प्रतीक है । अवतारो के अवतारी, कारणो के कारण, सर्वोपरि, परमब्रह्म परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान के चरणो में कल्याणकारी ऐसे सोलह प्रतीक है । इन प्रतिको के ध्यान की महिमा सहित चित्त की एकता ध्यान किया जाता है । इससे साधक का सार्वभौमिक उन्नति होती है । आध्यात्मिक कल्याण सरल एवं सुगम हो जाता है।

सद्‌गुरु श्री प्रेमानंद स्वामी कृत श्री स्वामिनारायण भगवान के चरणारविंद के प्रतीक का वर्णन करते कीर्तन की रचना किये है । जो –

"ओरा आवो श्याम स्नेही, सुंदर वर जोऊ वहाला,
जुगलचरणमां कहूं मनोहर, चिह तेना नाम वहाला ।
शुद्ध मने करी संभारता, नाश पामे काम वहाला,
अष्टकोणने उर्ध्वरेखा, स्वस्ति जांबु जव वहाला ।
वज्र अंकुश केतु ने पदम, जमणे पगे नव वहाला,
त्रिकोण कलश ने गोपद सुंदर, धनुष ने मीन वाला ।
अर्धचन्द्र ने व्योम सात छे, डाबे पगे चिहन वहाला ।

इस तरह महिमा सहित इन्द्रियो, अंतरण तथा जीवात्मा एक गद्‌गद कंठ से परमब्रह्म परमात्मा के चरणो में सोलह प्रतिको तथा उनके स्थान पर ध्यान करें तो धर्म ज्ञान, वैराग्य और महात्म युक्त ज्ञान युक्त, निष्काम, परा प्रेमलक्षणा भक्ति की सिद्धि प्राप्त होती है । और परमात्मा के मूर्ति का साक्षात्कार होता है । विना रोक-टोक के व्यक्ति का कल्याण होता है । यह सोलह प्रतीक अक्षरधाम में जाने, मुक्ति पाने के लिये सीढी है । जिस चरणारविंद को देखने के लिये देवता तरसते है । यह चरणारवृंद हम लोगो को मिला हुआ है । तो एकाग्र होकर सोलह प्रतीको को याद करके ध्यान करे । इससे अपना जीवन संसार से अलिप्त होकर प्रभु स्वरुप में जुड जाता है।

श्रीहरि के दाहिने चरण में नव प्रतीक है । जिसका चिंतन करने से जो फल मिलता है । उसका वर्णन किया जा रहा है।

(१) अष्टकोण :- श्रीजी महाराज के दाहिने चरण में उर्ध्वरेखा से दूर पानी में अष्टकोण प्रतीक है । इसका चिंतन करने से तो वह भक्त, पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, अहंकार, महानता और प्रकृति इन आठ आवरण से सहजता से भेद सकता है । आंतयंतिक कल्याण मे आठ आवरण उसे प्रभावित नही करते है । जो भक्त अष्टकोण रुपी प्रतीक का ध्यान करते है । वे अष्टांग योग का फल प्राप्त करते है । वह अष्टांग योग क्या है ? (१) यम (२) नियम (३) आसन (४) प्राणायाम (५) प्रत्याहार (६) धारणा (७) ध्यान (८) समाधि इसे अष्टांग योग कहते है । अष्टांग योग का फल मिलता है।

(२) उर्ध्वरेखा :- दोनो चरणो में उर्ध्वरेखा के प्रती कहै । लेकिन प्रतीक के रुप में दाहिने पैर को माना जाता है । जो भक्त उर्ध्वरेखा का ध्यान करता है । उसका कल्याण और उर्ध्वगति होती है । दिन-प्रतिदिन वह धर्मज्ञान वैराग्य और प्रेमलक्षणा भक्ति की वृद्धि करता है। और अक्षरधाम की प्राप्ति होती है।

(३) स्वास्तिक :- श्रीजी महाराज के दाहिने चरण में पानी मिलता है । स्वास्तिक आनंद-मगल और कल्याण का प्रतीक है । एकाग्रता से यदि प्रतीक का ध्यान किया जाये तो उससे भगवान के स्वरुप का आनंद प्राप्त होता है । उसका मंगल होता है । शरीर का अंत में आत्यंतिक कल्याण हो जाता है।

(४) जांबु :- जांबु प्रतीक का यदि एकाग्रता से ध्यानक रे तो भक्त का मन मायावी संसार में नही बंधता है । केवल हरि की मूर्ति में सर्व रस का पालन करने वाला विषय रुपी छाछ को ग्रहण नही करता है । अंत में आत्यांतिक कल्याण हो जाता है।

(५) जव :- जव का जो भक्त जन ध्यान लगाते है । उसका सभी पाप समाप्त हो जाता है । उस भक्त का आत्मा एवम् परमात्मा के ज्ञान का उदय हो जाता है।

(६) वज्र :- वज्र का ध्यान करने से भक्त के पाप रुपी पहाड को भेद सकता है । वह मनरुपी पक्षी के पंख को छेदकर श्रीहरि की मूर्ति में स्थिर हो जाता है।

(७) अंकुश :- अंकुश प्रतीक का ध्यान करने पर मनरुपी हाथी से जीत सकते है । काम क्रोध, मान, अहंकार, अभिमान आदि होते हुए भी उसे अंकुश में कर सकते है।

(८) केतु :- केतु अर्थात् ध्वजा, जो भक्त ध्वजरुपी प्रतीक का ध्यान करता है । वह भक्त काम रुपी शत्रु से विजय करके मायिक सुख छोडकर भगवान के अक्षरधाम को प्राप्त करता है।

(९) पदम (कलम) :- जो भक्तजन कमल रुपी प्रतीक का ध्यान करकता है तो वह भक्त संसार रुपी जल में रहते हुए भी डूबता नही है । संसार में अलिप्त होकर भगवान के स्वरुप में मस्त रहता है।

श्रीहरि के बाये चरण में सात प्रतीक है।

(१०) त्रिकोण :- त्रिकोण रुपी प्रतीक का जो ध्यान करता है तो वह भक्त त्रिविध ताप से मुक्त होकर स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर का त्याग करके ब्रह्म मय देह को प्राप्त करके अक्षरधाम में भगवान की सेवा में लीन हो जाता है । तीनो गुण से रहित निर्गुण बन जाता है।

(११) कलश :- जो भक्तजन कलश का ध्यान करता है । जिस प्रकार कलश शिखर पर रहता है । वह सर्वोपरि श्रीजी महाराज का अक्षरधाम प्राप्त करता है।

(१२) गोपद :- जो भक्त गोपद का ध्यान करता है । वह गोपद रुपी संसार के समुद्र को विना श्रम के पार हो जाता है।

(१३) धनुष :- जो भक्त धनुष रुपी प्रतीक का ध्यान करता है । उसे कामादि शत्रु हार जाते है । कोई आंतरिक शत्रु परेशान नही करता है।

(१४) मीन :- मछली रुपी प्रतीक का ध्यान करता है । तो सद्गुणो की वृद्धि होती है । संसार में रहकर संसाररुपी जल में पराभव नही प्राप्त करती है।

(१५) अर्धचन्द्र :- जो भक्त अर्धचन्द्र प्रतीक पर ध्यान लगाता है । भक्त के मन में अतिशय प्रकाश आता है । जैसे अर्धचन्द्र को देखकर कुमुद खुश होता है । उसी प्रकार भक्त का मन खुश होता है । भक्ति मार्ग में दिन-प्रतिदिन आगे बढता है । इसका आत्यंतिक कल्याण सुगम हो जाता है।

(१६) व्योम :- जो भक्त व्योम का दर्शन करता है । वह भक्त भगवान की अलौकिक प्रसन्नता से प्रभावित होकर भगवान के अक्षरधाम को प्राप्त होता है । वह संसार के विषयराग, पंचविषय, माया के पदार्थो से अलिप्त होकर निर्विकार होकर भगवान के स्वरुप को देखता है । इससे उसका कल्याण सरल और सुगम बन जाता है।

•

सत्कर्म ही जीवन

- लाभुबेन मनुभाई पटेल (मुं. कुंडाल, ता. कडी)

खुले मैदान में पेड लगते हुए । एक वृद्ध व्यक्ति को देखकर राजा ने उसे पूछा कि हे भाई ! आप कितने वर्ष के

है ? वृद्ध सोचकर थोडी देर में बोला ! राजन मेरी उम्र दो वर्ष है। राजा विस्मय से बोले ! ''यह कैसे हो सकता है ?'' राजा मैं गलत नही कह रहा हूँ । मेरा ७० वर्ष संसार के मोह-माया में बीत गया । पिछले दो वर्ष से मै सत्कर्म कर रहा हूँ । इसलिये हमारी दोव र्ष की उम्र मानी जाये ? वृद्ध की बात सुनकर राजा को जीवन का मर्म समझ में आ गया । सत्कर्म ही जीवन है । जीवन को मापने की कई वर्ष नही है । केवल जीवन में करने वाले सत्कर्म है । जीवन में वर्ष जोडना अच्छी बात नही है । वर्षो में जीवन जोडे यह महत्वपूर्ण होता है । मनुष्य कितना जिया यह नही ? कैसे जीवन व्यतित किया यह महत्व की बात है।

ताड का वृक्ष अधिक लम्बा होता है । उसका उम्र भी लम्बी होती है। लेकिन उसकी छाया ? किसी के काम में नही आती है। एक फूल सुबह खिलता है। शायं काल में मुरझा जाता है । लेकिन अपने अल्प काल के जीवन में चारो तरफ सुगंध विखेर देता है। मानव जीवन भी सत्कर्म से सफल बनता है । कहा जाता है कि प्रार्थना में हो दाथ जोडने से अच्छा है। दोनो हाथ मिलाकर सत्संग का कार्य करना चाहिए ।इससे दूसरे को भी सत्कर्म करने की प्रेरणा मिलती है । सत्कर्म के द्वारा मानव जीवन पुष्प के समान सुंदर, चंदन की तरह शीतल, दीपक की तरह प्रकाशवान बनता है। सत्कर्म मानव के अदंर प्रकाश पैदा करता है।

मनुष्य कभी एकांत भाव में अकेले में बैठकर अपने सतकर्मो का मूल्यांकन करे । तब उसका अन्तकरण शतदल कमल की तरह खिल उठता है। उसके मन में शांति का अनुभव होता है । प्रस्तुत विषय में जुडी हुई एक प्रेरक प्रसंग याद आ रहा है। एक दिन कोई आदमी गाँव के सीमा से स्मशान के पास से गुजर रहा था । उसका ध्यान स्मशान के घर पर गया । उस घर के दिवाल पर मृतको के नाम के साथ उम्र का भी वर्णन था । तो उसमें किसी की उम्र दो वर्ष, चार वर्ष, पांच वर्ष, आठ वर्ष, दस वर्ष लिखा था।

उसे ऐसा लगा कि इस गाँव में किसी की भी उम्र लम्बी नही होती है ? या गाँव शापित होगा ? इतने में उस गाँव का एक आदमी वहाँ से जा रहा था । वह आदमी उसके पास जाकर पूछा, भाई इस गाँव के लोग अल्प आयु में क्यो मृत्यु को प्राप्त हो जाते है ? वह व्यक्ति हँस कर उत्तर दिया कि आप जो समझ रहे है ऐसा नही है। हाँ हमारे गांव में एक नियम है। गाँव का प्रत्येक व्यक्ति अपने पास एक डायरी रखता है। उसमें सत्कर्म के समय को लिखता है। मरने के बाद उसकी डायरी पढी जाती है।

उसके सत्कर्म घंटो के आधार पर उम्र निर्धारित की जाती है। यह उम्र दिवाल पर लिख दी जाती है। यह बात सुनकर अगल व्यक्ति अचम्भे में पड गया । उसे ज्ञात हुआ जीवन के सफलता का मार्ग कितना सरल है ? हम इसी मार्ग पर चलेगे ?

श्री नरनारायणदेवो की आम्रोत्सव के यजमान

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकासदासजी की प्रेरणा से ता. १८-०६-२०२४ के दिन श्री नरनारायणदेव आदि देवो को आम्रोत्सव किया गया । इसके यजमान अ.नि.प.भ. वल्लभभाई भूराभाई नसित, अ.नि. दिवालीबेन वल्लभभाई नसित, वर्त. प.भ. प्रवीणभाई वी. नसित, प.भ. नरसिंहभाई वी. नसित, रेखाबेन पी. नसित, प्रभाबेन एम. नसित तथा निल मौलिक (अहमदाबाद).

श्री स्वामिनारायण मासिक के सदस्य बनाने की प्रेरणात्मक सेवा

प.पू. लालजी महाराजश्री के प्रेरणा-आशीर्वाद से अपने श्री स्वामिनारायण मासिक के सदस्य बनाने के लिये कई हरिभक्त सौजन्य सेवा देते है । अभी बापुपुरा गाँव में कथा के अवसर पर प.भ. कांतिभाई हाथीभाई चौधरी (पंडित) के सौजन्य सेवा से ३० जितने सदस्य बनाये गये है।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में आम्रोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के पूज्य महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान भरतखंड के राजाधिराजी श्री नरनारायणदेव का ता. १८-६-२४ को मंगलवार के दिन अ.नि.प.भ. वल्लभभाई भूराभाई नसित, अ.नि. दिवालीबेन वल्लभभाई नसीत परिवार (अहमदाबाद) के तरफ से भव्य के केसर आम का सुंदर आम्रोत्सव का अन्नकूट किया गया था । हजारो हरिभक्त अलौकिक दृश्य का दर्शन किये थे । तथा दर्शनक रके धन्य हुए । पूज्य महंत स्वामी के संत-पार्षद मंडल इस अवसर पर प्रेरणाकारक कार्य किये थे । यजमान परिवार पर श्री नरनारायणदेव और पूरा धर्मकुल अंतर से खुश हुए । (कोठारी शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी)

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर श्री नरनारायणदेव के केसर स्नान का दर्शन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के पूज्य महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव का केसर स्नान ज्येष्ठ सुद-१४ ता. २१-६-२०२४ दिन शुक्रवार को प्रातः ६-३० से ७-०० बजे तक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और पूज्य लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा विधिवत रुप से पूर्ण हुआ । लगातार डेढ महीने तक ठाकुरजी को चंदन का वाघा धारण कराके सभी हरिभक्तो ठाकुरजी के पूजारी ब्रह्मचारी संतोने सुंदर अलौकिक दर्शन कराया गया ।

केसर स्नान के यजमान श्री उनावा मित्र मंडल, पटेल मुकेशभाई लालभाई, पटेल प्रकाशभाई लालभाई, पटेल देवेन्द्रभाई नारणभाई, पटेल मनीषभाई नटवरभाई, पटेल विनु अंबालाल, पटेल दक्षेशभाई रमेशभाई आदि मित्र मंडल यजमान बनकर अलौकिक लाभ लिये थे । प्रसंगोचित सभा में सर्व प्रथम पूज्य महंत स्वामी ने केसर स्नान का महत्व समझाये थे । सभी यजमान परिवार का प.पू. महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा पुष्पहार पहनाकर सन्मान किया गया था ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने उनावा गाँव के सभी यजमान मित्र मंडल को खुश होकर आशीर्वाद दिये । आज प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने ३ ब्रह्मचारी संतो को और १ संत को महादिक्षा दिये ।

आज प्रतः ७ से १० बजे के मध्य श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धुन की गई । ठाकुरजी को थाल, धर्मकुल, संतवर्णी, पार्षदो के भोजन खिलाया गया था ।

इस अवसर पर सभा का संचालन शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी ने किया था । रसोई की सेवा मे पू. जे.पी. स्वामी भंडारी धर्मस्वरुप स्वामी ने प्रेरणात्मक सेवा किये थे ।

(कोठारी स्वामी, कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर ज्येष्ठ मासकी पूनम की सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अहमदाबाद मंदिर के पूज्य महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के प्रेरणा मार्गदर्शन में प्रत्येक पूनम को श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में धर्मकुल के उपस्थिति में २ घंटे तक सत्संग सभा में सुंदर आयोजन किया जाता है ।

ता. २२-६-२४ दिन शनिवार इस बार की ज्येष्ठ सुद-१५ की सत्संग सभा प.भ.श्री अमृतभाई मणीभाई पटेल (चांदखेडा), अ.सौ. संगीताबेन अमृतभाई पटेल, प्रेयश अमृतभाई पटेल, रानुबेन अमृतभाई पटेल, पावनी पटेल आदि परिवार की तरफ से ठाकुरजी का थाल, संत-वर्णी, पार्षदो और हरिभक्तो की रसोई का प्रबन्ध किया गया था । पू. घनश्याम स्वामी ने संगीत के साथ भगवान श्रीहरि के लीलाचरित्र का गान किये थे ।

प्रसंगोचित सभा में पूज्य महंत स्वामीश्रीने श्री नरनारायणदेव के महात्म के साथ यजमान परिवार की सेवा की प्रशंसा किये थे । और प.पू. आचार्य महाराजश्री यजमान परिवार के उपर खुश होकर आशीर्वाद दिये थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने प्रत्येक गाँव में प्रत्येक पूनम को सत्संग सभा हो ऐसी आज्ञा दिये थे । अन्त में महामंत्र धुन के बाद ठाकुरजी की राजभोग आरती उतारी गई । इसके पश्चात हजारो

दर्शनार्थी भोजन प्रसाद लेकर गये । सभा का सुंदर संचालन शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजीने शोभित किया था ।

(कोठारी स्वामी कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर से.-२ गांधीनगर रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में होने वाली प्रवृत्तियाँ

श्री स्वामिनारायण मंदिर, से-२, गांधीगनर वर्ष २०२४ में २५ वर्ष पूर्ण होने जा रहा है । इस पर प.पू.ध.धु. १००८ आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा पूरे धर्मकुल परिवार के आशीर्वाद एवम् आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद के पूज्य महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से और गांधीनगर मंदिर के महंत श्री व्रजभूषणदासजी के मार्गदर्शन में धार्मिक तथा अन्य सामाजिक कृत्य वर्ष बीच चली है । उसकी सामान्य झलक देखे ।

"सत्संग सभा-२" : ता. ५-५-२०२४ दिन रविवार को गाँधीनगर जिला के श्री स्वामिनारायण मंदिर लवारपुर के स्थानकि हरिभक्तो द्वारा श्री वसंतभाई नानुभाई पटेल यजमान पद से सत्संग सभा का प्रबन्ध रात्रि ९ से १०-३० बजे तक किया गया था । इस अवसर पर श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा संत सभा में पधारकर सत्संग, कीर्तन, भक्ति किये थे । ४०० जितने हरिभक्त भक्तिभाव से सत्संग का लाभ उठाये थे ।

"सत्संग सभा-३" : ता. १७-५-२०२४ शुक्रवार के दिन गांधीगनर जिले के नाना चिलोडा गाँव में स्थानीय हरिभक्तो द्वारा सत्संग सभा रात में ९ से १०-३० तक प्रबन्ध किया गया था । अहमदाबाद मंदिर के पूज. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, पूज्य शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी स्वामी (कोटेश्वर) तथा संत मंडल सभा में पधारकर सत्संग, कीर्तन का लाभ दिये थे । सभा में लगभग ६०० हरिभक्त भक्ति भाव से सत्संग का लाभ लिये थे ।

"सत्संग सभा-४" : ता. २८-५-२४ दिन मंगलवार के दिन गांधीनगर जिले के वावोल गाँव में श्री अनिलभाई चंतुरभाई पटेल परिवार के यजमान पद से सत्संग सभा का आयोजन रात्रि में ९ से १०-३० तक किया गाय था । श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद के संत सभा में पधारकर सत्संग-कीर्तन का लाभ लिये थे । लगभग ४५० हरिभक्त भक्तिभाव से सत्संग का लाभ उठाये थे ।

"कीर्तन भक्ति सभा-२२" : श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ के रजत जयंती महोत्व के उपलक्ष्य में कई कार्यक्रम को प्रबन्ध में से २५ वी सभा में से २२ वी कीर्तन-भक्ति सभा ता. ७-५-२४ मंगलवार के दिन प.भ. विष्णुभाई गोविंदभाई चौधरी के निवास स्थान से-२६ में रात को ८-३० से १०-३० तक किया गया था । यहाँ पर अधिक संख्या में हरिभक्त आकर भक्तिभाव से कीर्तन का लाभ उठाये थे ।

"कीर्तन भक्ति सभा-२३" : श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ के रजत जयंती के महोत्सव के उपलक्ष्य में अनेक कार्यक्रम के आयौजन तहत २५ सभाओ में से २३ कीर्तन भक्ति सभा ता. १९-५-२४ रविवार के दिन प.भ. मयूरभाई केशवलाल पटेल परिवार (आवावाले) (से-२२) के यजमान पद से रात्रि ८-३० से १०-३० तक की गयी । इस सभा में ४९९ हरिभक्त आकर कीर्तन भक्ति का लाभ लिये थे ।

"कीर्तन भक्ति सभा-२४" : श्री स्वामिनारायण मंदिर से०२ के रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में अनेक प्रकार के कार्यक्रमो का आयोजन २४ वी कीर्तन भक्ति सभा ता. २४-५-२४ शुक्रवार के दिन प.भ. बिपीनभाई मणीभाई पटेल परिवार के यजमान पदे से (से-७ मे) रात्रि को ८-३० से १०-३० तक की गई वहाँ पर अधिक संख्या में हरिभक्त आकर कीर्तन भक्ति का लाभ लिये थे ।

"महिला सत्संग सभा" : श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ के रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में अनेक कार्यक्रम के आयोजन के अर्न्तगत प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आज्ञा आशीर्वाद से महिला सत्संग सभा ता. २७-५-२४ सोमवार के दिन ३-३० से ६-३० तक आयोजित की गई थी । आज की सभा में श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद की सांख्ययोगी बहने पधाकर सत्संग सभा का लाभ दी थी । सभा में अधिक संख्या में बहने उपस्थित थी । सप्ताह में महिला सत्संग सभा द्वारा प्रत्येक गुरुवार को शायं ४ से ५ बजे तक हरि स्मृति पाठ किया जाता है ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२, गांधीनगर रजत जयंती के अवसर पर अनेक क्रिया-कलाप सिनियर सिटीजन मंडल, युवक मंडल और महिला मंडल की सभी सदस्यो ने तन, मन, एवम् धन उत्साहपूर्वक सेवा दिये थे । पूरे प्रवृत्ति में अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी पी.पी. स्वामी संत मंडल के साथ उपस्थित थे तथा मार्गदर्शन दिये थे । (विपीन पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर से.-२ गांधीनगर रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में चलने वाली अनेक प्रवृत्तियाँ

"कीर्तन भक्ति सभा-२५" : श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ के रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में अनेक कार्यक्रमो का आयोजन २५ सभा से २५ कीर्तन भक्ति सभा ता. ७-६-२०२४ दिन शुक्रवार को प्रातः ८ से १०-३० तक श्री

स्वामिनारायण मंदिर, से-२ में मनाया गया था । अधिक संख्या में हरिभक्तोने कीर्तन का लाभ उठाये थे ।

"एज्यूकेशन कीट का वितरण" : श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ द्वारा गांधीगनर की अंधशाला छात्रालय से-१६ मूक वधिर शिशु विद्या मंदिर से-२८ सद्‌विचार विकलांग स्कूल, उवारसद, धरमपुर, दोलाराणा वासणा, इसनपुर, नांदोल, वर्धाना मुवाडा, सलकी, आदरज, लवारपुर, बालवा, सोनारडा, कुडासण, से-२ मंदिर बाल मंडल तथा उनावा के स्कूल के विद्यार्थियो को एज्युकेशन कीट, जिस में फूल स्केप चोपडा, रबर पेन्सलि का वितरण किया गया था । से-२ मंदिर के पू. महंत स्वामी व्रजभूषणदासजीने स्वयं प्रत्येक गाँव में जाकर बालको को किट वितरत किये थे ।

"आम्रोत्सव" : ता. २८-५-२४ दिन मंगलवार को श्री स्वामिनारायण मंदिर सेकटर-२ में भव्य आम्रोत्सव मनाया गया था । सभी देवो को सुंदर केसर आम की भेट चढाई गई थी ।इस अवसर में कुडासन के मित्र यजमान पद पर लाभ लिये थे ।

"सत्संग सभा-५" : ता. १६-६-२४ रविवार के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर पोर गाँव के समस्त सत्संग समाज यजमान कर रहे थे । सत्संग सभा का आयोजन रात्रि ९ से १०-३० बजे तक था । इस अवसर पर श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद के संत सभा में पधारकर सत्संग, कीर्तन, भक्ति का लाभ दिये थे । लगभग ४५० जितने हरिभक्त भक्ति भाव से सत्संग का लाभ लिये थे ।

श्री स्वामिनारायण मंदरि से-२, गांधीनगर रजत जयंती महोत्सव के अर्न्तगत विविध प्रवृत्तियो में अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा से-२ मंदिर के पूज्य महंत स्वामी व्रजभूषणदासजी इस उत्सव का मार्गदर्शन किये थे । सिनियर सीटीजन मंडल, युवक मंडल और महिला मंडल के सभी सदस्य तन, मन, धन से उत्साह पूर्वक सेवा दिये थे । (विपीन पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी ६ घंटे की धुन तथा बालमंडल द्वारा व्यसन मुक्ति रैला

श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण के अर्न्तगत तिथि के अवसर पर ता. १६-६-२०२४ रविवार के दिन भाई १ घंटे तथा बहने ५ घंटे का श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धुन किये थे ।

अपने कालुपुर मंदिर से श्री स्वामिनारायण बाल सत्संग पुस्तिका पर्ण-१ में लिखी गई व्यसन मुक्ति की प्रवृत्ति के अर्न्तगत व्यसन से हानि १६ प्ले कार्ड के साथ बाल मंडल के बच्चे मंदिर के आस-पास निवास स्थल पर प्रातः ९ से ११ तक धुमे थे । बाल मंडल के संचालक गोरधनभाई वी. सीतापरा पोर्टेबल स्पीकर द्वारा लगातार बोलते रहे थे । शिक्षापत्री का महत्व, व्यसन से हानि, बालको को संस्कारी बनाने पर बल दिये ।

व्यसनमुक्ति रैली की विशेष कर जो बालको द्वारा की गई थी । इससे अति आनदं प्राप्त हुआ ।

(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

कालीयाणा गाँव में श्रीहरि के अंतर्धान तिथि के अवसर पर धुन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर धाम के पू. महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से कालीयाणा गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर के ज्येष्ठ सुद-१० को श्रीहरि के अंतर्धान तिथि के अवसर पर गाँव के सभी भाई-बहन हरिभक्त श्री स्वामिनारायण महामंत्र ६ घंटे तक अखंड धुन किये थे। प.भ. डाह्याभाई बूटियाने पूर्णाहुति आरती करके सभी को आशीर्वाद दिये थे । (कोठारी श्री कालीयाणा)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मयूरनगर

मूलीधाम निवासी परमकृपालु श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा श्रीजी स्वामी (हलवद सरा रोड) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मयूरनगर का दूसरा पाटोत्सव ता. २७-५-२०२४ के दिन उल्लास पूर्वक मनाया गया । इस अवसर पर त्रिदिवसीय कथा सेवावत्सल स्वामी (मूली) किये थे । रणजीत गढ की सांख्ययोगी बहने, कोठारी प्रवीणभाई आदि हरिभक्त प्रेरणारुप सेवा दिये थे । श्रीराम मंदिर के जीर्णोध्धार के लिये गाँव के हरिभक्त अच्छी सेवा दिये थे ।

(प्रति अनिल दूधरेजिया)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण हिन्दू मंदिर बाल्टीमोर (अमेरिका)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा यहाँ पर सेवा पूजा करते महंत स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (आदरज) की प्रेरणा-मार्गदर्शन मे अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर बाल्टीमोर में ता. १६-६-२०२४ ज्येष्ठ सुद-१० श्रीहरि अंतर्धान तिथि के अवसर पर सभी हरिभक्त साथ रहकर अखंड-धून कीर्तन किये थे । पू. राम स्वामी सत्संग की सुंदर प्रवृत्ति करके हरिभक्तो को खुश किये ।

(कोठारीश्री, बाल्टीमोर मंदिर)

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

वैशाख सुद-१/२ प.भ. नयनाबेन अमरतभाई पटेल (वापी), प.भ. अ.नि. परसोमतभाई हिराभाई गढीया (उगामेडी)। **वैशाख सुद-३** प.भ. पर्व हार्दिककुमार पटेल (अंबापुर), प.भ. निमेष कानजीभाई पटेल (वडु), प.भ. जीज्ञाबेन के. पटेल (नेत्रा-कच्छ)। **वैशाख सुद-४** प.भ. धनबाई गांगजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. सोहम किरीटभाई डाह्याभाई पटेल (अहमदाबाद)। **वैशाख सुद-५** प.भ. रामदेवसिंह हरिसिंह झाला (अहमदाबाद), प.भ. भाईलालभाई शांतिलाल पाटडीया (पालीयाद), प.भ. कपीलाबेन मूलजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. बिपीनचंद्र केशवलाल पटेल (अहमदाबाद), श्री नरनारायण ईन्फ्रास्ट्रचर सहजानंद मेरी गोल्ड (चांदखेडा), प.भ. प्रविणभाई वी. कोठीया (निकोल), प.भ. जयदिप मनसुख भंडारीया (मिरजापुर-कच्छ)। **वैशाख सुद-६** प.भ. बिपीनभाई गोसलीया (गढडा), श्री स्वामिनारायण महिला मंडल (घमीज)। **वैशाख सुद-७** प.भ. श्रेयांसी भरत लालजी छबाडीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. अ.नि. बीनाबेन मनजी हालाई (मांडवी-कच्छ)। **वैशाख सुद-८** प.भ. कांति मूलजी मेपाणी (सुखपर-कच्छ), प.भ. अ.नि. मनसुखभाई एम. गोहिल (अहमदाबाद), प.भ. धनजी कुरजी हरसीयाणी (केरा-कच्छ), प.भ. नरसीभाई धनजीभाई केवडीया (सुरत), प.भ. अ.नि. मेघबाई मावजी गोरसीया (सुखपर-मदनपुर-कच्छ)। **वैशाख सुद-९** प.भ. विष्णुभाई रमणभाई बेचरभाई चौधरी (बालवा), प.भ. मंजुलाबेन विनुभाई सांगाणी (अहमदाबाद), प.भ. प्रविणकुमार त्रिभोवनदास पटेल (अहमदाबाद)। **वैशाख सुद-१०** प.भ. रामजी मावजी गोरसीया परिवार (सुखपर-मदनपुर-कच्छ), प.भ. जयंतीलाल कानदास पटेल (निकोल)। **वैशाख सुद-११** प.भ. काश्वी रिकीन केराई (मांडवी-कच्छ)। **वैशाख सुद-१२** प.भ. डॉ. पी.बी. भाटीया (जामजोधपुर), अ.नि. पूजारी स्वामी वासुदेवचरणदासजी (डाकोरवाला), प.भ. मित अल्पेशभाई पटेल (शाहीबाग), प.भ. प्रेमीलाबेन मावजीभाई कल्याण हिरजी (मिरजापर-कच्छ), श्री नरनारायणदेव प्रसन्नार्थे (सरसपुर), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ)। **वैशाख सुद-१३** प.भ. अ.नि. लक्ष्मण प्रेमजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. तृषितकुमार पटेल (अहमदाबाद), प.भ. प्रनिल दिपक तारपरा (अहमदाबाद)। **वैशाख सुद-१४** प.भ. अ.नि. मूलजी भीमजी हिराणी (सुखपर-कच्छ), प.भ. जयेशभाई जयंतीलाल सोनी (अहमदाबाद), प.भ. केविन कमलेशभाई (निकोल), प.भ. रिवा केविन नंदुभाई पटेल (झुंडाल)। **वैशाख सुद-१५** श्री स्वामिनारायण मंदिर दरबारगढ (मोरबी), प.भ. अ.नि. धनजी नारण छभाडीया (भारापर-कच्छ), प.भ. देवुबा महेन्द्रसिंह डाभी (डांगरवा), प.भ. अ.नि. शांताबेन जगदीशभाई रूपारेलीया (अहमदाबाद), लीलानंद मेग्नेशीयम पेट प्रा.ली. प.भ. मयंकभाई कामदार (पोरबंदर)।

वैशाख वद-१ प.भ. अ.नि. हिरालाल नारणजी बावा (भुज-कच्छ), प.भ. अ.नि. शांताबेन टी. गज्जर (अहमदाबाद), प.भ. संदिपभाई परसोतमभाई चौहाण (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. धनबाई धनजी वेकरीया (रामपर-वेकरा-कच्छ), प.भ. नीताबेन राजुभाई पटेल (डुंगरी), प.भ. भावेशभाई धीरूभाई कथीरीया (सुरत)। **वैशाख वद-२** प.भ. चिरागभाई मुकुन्दभाई भावसार (अहमदाबाद), प.भ. रमेशभाई त्रिकमभाई कावर (अहमदाबाद), प.भ. दिव्याबेन कानाबार (हैद्राबाद)। **वैशाख वद-३** प.भ. चंद्रकान्तभाई हरिलाल ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. महेन्द्रभाई के. पाठक (अहमदाबाद), प.भ. रंजनबेन भूपेन्द्रभाई हलवदीया (अहमदाबाद), प.भ. रजनीकांत पुरूषोत्तमदास पटेल (थलतेज), प.भ. अजयभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ. कौशल सोनी - विपुल पिंडोरीया (झांबीया), प.भ. रेखा कुंशांगकुमार पटेल (गुलाबपुरा)प.भ. पार्वतीबेन बाबुलाल (वडु), प.भ. चमनभाई सुखाभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. निलकंठभाई पटेल (अहमदाबाद)। **वैशाख वद-४** प.भ. अ.नि. गोदावरीबेन सवजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. राकेशकुमार अंबालाल मोतीदास (खरणा)। **वैशाख वद-५** प.भ. प्रशांतभाई वालजीभाई वेकरीया , प.भ. डाहीबेन एन. पटेल (साचोदर)। **वैशाख वद-६** प.भ. अ.नि. मुकेशभाई कानदास पटेल (मोखासणवाला), प.भ. अ.नि. बिपीनचंद्र वाडीलाल सोनी (अहमदाबाद), प.भ. क्रिश विनयकुमार पटेल (गांधीनगर), प.भ. आकाश डुंगरभाई छेलीया (अहमदाबाद)। **वैशाख वद-७** प.भ. प्रविणाबेन गोहिल (अहमदाबाद), प.भ. घनश्यामभाई मूलजीभाई ठक्कर (गांधीधाम-कच्छ)। **वैशाख वद-८** प.भ. भूवा रसिक हिरजी (सुखपर-कच्छ), प.भ. मनुभाई अरजणभाई लक्कड (सुरत), प.भ. अशोकभाई जोईताराम पटेल (डांगरवा)। **वैशाख वद-१०** प.भ. अ.नि. प्रफुलचंद्र व्रजलाल आदेसरा (अहमदाबाद)। **वैशाख वद-११** प.भ. राधाबेन प्रेमजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. प्रत्युरा पटेल (अहमदाबाद), प.भ. प्रहलादभाई जादवजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. राजुभाई ईश्वरभाई पटेल (नारणपुरा)। **वैशाख वद-१२/१३** प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), सत्संग समाज (नवा वाडज), प.भ. परबत लालजी भूवा (सुखपर-कच्छ), प.भ. सुनील प्रेमजी केराई (बलदीया-कच्छ), प.भ. अ.नि. लाभुबेन मूलजीभाई नाथाणी (अहमदाबाद), प.भ. सोनलबेन हितेषभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. रूद्र वासुदेव गजेरा (अहमदाबाद), प.भ. धरतीबेन प्रफुलभाई वोरा (अहमदाबाद), प.भ. किशोरी मुकेशभाई नारसंगभाई (अहमदाबाद), प.भ. धर्मिष्ठाबेन पटेल प.भ. हसमुखभाई पटेल (कंडारी), श्री रंगमहोल घनश्याम महाराज। **वैशाख वद-१४** प.भ. मेघजी मनजी हिराणी सह परिवार (मांडवी-कच्छ), प.भ. लालबाई नारण वेकरीया सह परिवार (मांडवी-कच्छ)। **वैशाख वद-३०** प.भ. अ.नि. मनजी मूलजी भूडीया (सुखपर-कच्छ)।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji

राले (अमेरिका) मंदिर के पाटोत्सव पर ठाकुरजी की अभिषेक की आरती उतारते प.पू. आचार्य महाराजश्री।

एटलान्टा (अमेरिका) मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते प.पू. आचार्य महाराजश्री।

जैक्सनविले (अमेरिका) मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर शंकर-पार्वतीजी के मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री।

कोलोनिया (अमेरिका) मंदिर में यज्ञ में श्रीफळ चढाते प.पू. लालजी महाराजश्री।

गांधीनगर से-२ मंदिर में चोपडा वितरण।

नांदोल मंदिर में आम्रोत्सव।

नारणपुरा मंदिर में तरबूच का अन्नकूट।

नारणघाट मंदिर में केसर स्नान अभिषेक दर्शन।

गांधीनगर से-२ मंदिर में केसर स्नान अभिषेक दर्शन।

मथुरा मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर अन्नकूट दर्शन।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 “ Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026

॥ સત્કાર સમારંભ ॥

પ.ભ.રા.રા.શ્રી

પરમ કૃપાળુ પરમાત્મા શ્રી નરનારાયણ દેવના પાવન ચરણકમળોથી સાદર જય શ્રી સ્વામિનારાયણ। શ્રી નરનારાયણ દેવ દેશ ગાદીના ભાવિ આચાર્ય ૧૦૮ શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના લગ્નોત્સવના પાવન પ્રસંગે સત્કાર સમારંભ સં.૨૦૮૦ અષાઢ સુદ-૧૦ તા.૧૬-૭-૨૦૨૪ને મંગળવારના શુભ મંગળ દિને આયોજીત કરેલ છે।
તો આ શુભ અવસરે નવદંપતિને શુભેચ્છા પાઠવવા પધારી શોભામાં અભિવૃધ્ધિ કરશોજી।

સમય: સાંજે ૫-૦૦થી ૮-૦૦
સ્થળ: વિજ્ઞાન ભવન હોલ,
સાયન્સ સીટી (ગેટ નં. ૫)
એસ.જી.હાઈવે, અમદાવાદ

લી.
સમગ્ર ધર્મકુળ વતી
મહંત સ્વામી,
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર,
કાલુપુર, અમદાવાદ-૧.